Chap-3

तृतीय अध्याय

व्यंग्य कवियों का परिचयात्मक अध्ययन

अध्याय-3

व्यंग्य कवियों का परिचयात्मक अध्ययन

1. काका हाथरसी
2. बरसाने लाल चतुर्वेदी
3. गोपाल प्रसाद व्यास
4. रामप्रसाद मिश्र
5. डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल
6. योगेन्द्र मौद्गिल
7. कालीचरण गौतम
8. चिरंजीव
9. मिश्रीलाल जायसवाल
10. जैमिनी हरियाणजी
11. बौड़म लखनवी
12. डॉ. किशोर काबरा
13. अल्हड़ बीकानेरी
14. ओम प्रकाश आदित्य
15. राम किशोर मेहता
16. श्रीराम ठाकुर दादा
17. आदित्य शर्मा चेतन
18. हुल्लड़ मुरादाबादी
19. प्रेम किशोर ''पटाखा''
20. आशाकरण अटल
21. अशोक चक्रधर
22. जयप्रकाश ''रुसवा''
23. पं. सुरेश नीरव
24. अशोक अंजुम

तृतीय अध्याय

व्यग्यं कवियों का परिचयात्मक अध्ययन

साठो-तरी हिन्दी हास्य-व्यंग्यकाव्य की पृष्ठभूमि

स्वतंत्रता के पश्चात् विसंगतियों का अतिरेक होने के कारण व्यंग्य का उपयोग एक सशक्त ओरे कारगर हथियार के रूप में किया जाने लगा।

स्वतंत्रता के पूर्व व्यंग्य कही कहानी, उपन्यास, एकांकी अथवा काव्य जैसी विधाओं के सहारे विकसित होता रहा।

वह अभी तक अपने स्वतंत्र पैरों से चलने की शक्ति जुटा नहीं पाया था। अन्य विधाओं के सहारे चल रहा था। इसी प्रकार उसने हास्य का दामन नहीं छोड़ा था। किन्तु स्वतंत्रता के पश्चात् स्वतंत्र रूप से सभी विधाओं में लिखा जाने लगा।

अब उसे किसी विधा की वैशाखी पर चलना पसन्द नहीं था। कल तक वह अन्य विधाओं का किरायेदार था। आज वह अपने ही मकान में स्वतंत्र रूप से रह रहा है यही कारण है कि स्वतंत्रता काल में व्यंग्य साहित्य का प्रयोग अत्यधिक मात्र में होने लगा।''स्वातंत्र्योत्तर लेखन की बहुत सारी विलक्षणताओं में एक विशिष्ट विलक्षणता यह रही है कि हास्य और व्यंग्य का पार्थक्य स्पष्ट हुआ और 1960 तक व्यंग्य विधा के रूप में उदय हुआ। हिन्दी के आधुनिक लेखन ने जहाँ विविध रूप शैलियों में विकासशील होने के कारण अपने वैशिष्ट्य की ओर आकर्षित किया है। वहीं व्यंग्य ने अपना अलग चरित्र प्रस्तुत किया है।''

भारेतन्दु और उनके समकालीनो ने व्यंग्य लेखन की जैसी परंम्परा चलाई उसका स्वरूप मुख्यतः सुधारवादी आदर्श परक था। तब से अब तक हिन्दी के व्यंग्य लेखननी लंबी यात्रा पूरी की है व्यंग्य का स्वरूप उसका चरित्र और प्रस्तुतीकरण का परिवेश आमलचूल परिवर्तितसे चुका है। हिन्दी का स्वातंत्र्योत्तर व्यंग्य अनुभूति की

जिन गहराइयों और अंतविरोधों के जिस संघर्ष से जन्मा है, बीता हुआ व्यंग्य लेखन उसके सामने परिहास मात्र है।''

साठोत्तरी हिन्दी व्यंग्य कवियों का परिचय

काका हाथरसी

1. मूलनाम :- इनका पूरा नाम प्रभुलाल गर्ग था। इनका जन्म 18 सितंबर सन् 1906 ई. हाथरस में अग्रवाल परिवार में हुआ। हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में काका हाथरसी के नाम से विख्यात हैं। हास्य-व्यंग्य काव्यधारा के शलाका पुरुष हैं।

2. परिवार परिचय : काका के प्रतिथामह गोकुल महावन से आकार हाथरस में बस गये थे। उन्होंने बर्तन का व्यापार किया। पितामह श्री सीतामार भी इसो कार्य में संलग्न रहें। काका के पिता शिवलाल गर्ग को भी बर्तन का कार्य करना पड़ा।

3. शिक्षा-दीक्षा एवं योग्यताएँ :- दस वर्ष की अवस्था तक इनकी शिक्षा-दीशा का नियमित प्रबंध नहीं हो सका। ऐसी स्थिति में मामा पुनः इन्हें इग्लास ले आये और स्कूल में प्रवेश कर दिया।

बचपन से ही काका के मन में काव्य-कीटाणु जोर मारने लगें। तहसीली स्कूल छोड़ने के बाद इग्लास के ही एक वकील साहब से दो घंटे रोजाना अंग्रेजी पढ़ने लगे। वकील साहब काफी भारी-भरकम गोल-मटोल थे। बच्चें उन्हें बिना ''सूँड का हाथी आया'' कहकर भाग जाया करते थे। एक दिन काका के मन क्में काव्य-कीटाणु ने जोर मारा और कविता की यह पंक्तियाँ निकल आईः जैसे

''एक पुलंदा बाँधकर, कर दी उस पर सील,
खोला तो निकले वहाँ, लखमीचन्द्र वकील।
लखमीचन्द्र वकील, वजन में इतने भारी,
बैठ जाएँ तो पंचर हो जाती है लारी।
श्री मानजी कभी ऊँट गाड़ी में जाएँ,
पहिए चूँ-चूँ करें, ऊँट को मिरगी आएँ।''1

अतः सिद्ध होता है कि काका बचपन से ही शीध्र कवि थे।

4. विवाह – काका का विवाह 21 वर्ष की अवस्था में सन् 1926 में रतन देवी (वर्तमान काकी) से हुआ।

5. कार्य क्षेत्र :- काका ने अपने जीवन में बड़ी लगन और मेहनत से कार्य कियें। तद्परान्त उन्हें निरन्तर प्रगति मिलती गई। वे मुनीम से रोकड़िया के पद पर पहुँच

गयें।

साहित्यिक क्षेत्र में भी काका का व्यक्तित्व बहुआयामी रहा। उन्होंने व्यंग्य काव्य के अतिरिक्त व्यंग्य नाटक, एकांकी, कहानी, निबन्ध, उपन्यास जैसे साहित्यिक रूपों पर भी अपनी जोरदार कलम चलाई है।

सन् 1944 के पश्चात् काका की मंचीय सीमा का विस्तार आरम्भ हो गया, और काका का नाम जाने-माने कवियों में गिना जाने लगा।

6. प्रकाशित कृतियाँ : काका हिन्दी साहित्य जगत के विशिष्ट कवि के रूप में जाने जाता हैं।

काका की प्रथम कविता ''गुलदस्ता''मासिक के मुखपृष्ठ पर सन् 1933 में प्रकाशित हुई।

व्यंग्य कृतियाँ :- चालीस वर्ष की अवस्था में काका की प्रथम पुस्तक ''काका की कचहरी'' 1946 में प्रकाशित हुई।

पितला (सन् 1950), मियाऊँ (1954)

''दुलन्ती'' (सन् 1961), ''कारतूस'' (1963) तथा काका के प्रहसन नाम से उनके आठ प्रहसनों का संग्रह प्रकाशित हुआ। काका को उनकी सरलता और परिहासात्मक वृत्ति के कारण महान् सफलता मिली और इसके बाद लगातार अनेंक व्यंग्य कृतियाँ प्रकाशित होने लगी :-

काका की फुझड़ियाँ (1965)
काका के कहकहे (1966)
महामूर्ख सम्मेलन (1966)
काका की काकटोल (1967)
चकतलस (1966)
काकाकोला (1968)
हँसगुल्ले (1969)
काका के धड़ाकें (1969)
कह काका कविराय (1970)
किल्मी सरकार (1972)
जय बोलो बेईमान की (1973)
काका काकी की नोंक झोक (1976)
काका काकी के लवलैटर्स (1977)

हसंत बसंत (1978)
योगा एण्ड भोगा (1980)
काका की चौपाल (1982)
यार सप्तक (1983)
काका का दरबार (1985)
मीठी-मीठी हँसाइयाँ (1986)
हास्य के गुब्बारें (1988)
आदि हास्य - व्यंग्य संकलन प्रकाशित हुए। 2

(7) पुरस्कारः काका को हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अनेंक पुरुस्कारों से सम्मानित किया गया। सन् 1957 में लालकिले पर भारत की प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की शताब्दी मनाई गई। तब काका को कविता करने का आग्रह किया गया। वाका हाथरसी हास्य रस प्रधान कवि थे उन्होंने हास्य-रस में डुबोकर कविता लिखी। और उन्हें सम्मानित किया गया।

हास्य रस में डूबी अनेक कविताओं के योगदान के फलस्वरूप काका हाथरसी को अनेक संस्थाओं के द्वारा दिनाँक 26 मार्च 1985 को राष्ट्रपति भवन के दरबार हाल में आयोजित अलंकरण समारोह में पदमश्री से सन् 1976 में केन्द्रीय मंत्री श्री कृष्णचन्द्र पंत ने सप्रहाउस, नई दिल्ली में हास्य-व्यंग्य का सर्वश्रेष्ठ 'ठिठोली पुरस्कार'

1976 में 'अगतश्री की उपाधि, 1976 में उनकी 70 वी वर्षगाँठ पर केन्द्रीय मंत्रीयों ने सम्मानित किया और काका हाथरसी अभिनन्द ग्रन्थ का विमोचन किया।

1977 में आगरा की साहित्यिक संस्था 'उपासना'

1980 में ज्ञानी जैलसिंह, 1979 में उपराष्ट्रपित ने 'कलारच्न', 1980 में सरस्वती डिग्री कालेज, हाथरस के दीक्षांत समारोह में उ.प्र. के मंत्री श्री ब्रहादत्त ने भारत-शंख की उपाधि, 1984 में वाल्टीमोर (वाशिंगटन) यु. एस. ए. के मेयर ने आँनरेरी सिटीजन सिप जैसे अनेक उपाधियों से अलंकृत किया जा चुका है। 3

(8) देश-विदेश की यात्रायें :- काका को विदेशों में भी लोकप्रियता मिली। विदेशों में लोगो का जीवन तनाव पूर्ण था उनके लिए हास्य व्यंग्य प्रधान कविता ने रुचिकर जीवन जीने योग्य बना दिया।

सन् 1974 में बैंकाक और सिंगापुर के निवासियों ने उन्हें अपने यहाँ आमंत्रित किया। 22 दिन तक वहाँ रहकर काका ने अपनी हास्य कविताओं के द्वारा वहाँ के लोगों में आनन्द भर दिया। काका ने अमरीका, कनाड़ा की यात्रा 26 अगस्त,

1984 से 10 नवम्बर 1984 तक की वहाँ रहकर 40 कार्यक्रमों का आयोजन किया। और वहाँ काका को ख्याति प्राप्त हुई। पुनः अमरीका और कनाड़ा का निमंत्रण नवम्बर 1986 में मिला। और वहाँ से लौटते समय 24 दिन लंदन में बी.बी.सी. तथा टी.वी. प्रोग्राम चलते रहे।

काका को देश-विदेशों में हास्य-व्यंग्य काव्य का झण्ड़ा फहराया। 4

(9) अभिरुची, स्वभाव, व्यक्तित्व : काका शुरू से ही हँसमुख स्वभाव के थे काका बचपन से ही शरारती थे और दूसरों की सेवा करने के लिये तैयार करते थे। कविता करने में शुरू से ही इनका रुझान था एक बारात में भोजन को देखखर आपके हास्य के कीटाणु सरसराने लगे फलस्वरूप आपके कविता की कुछ पंक्तियाँ पढ़ी, जिससे लाठियाँ चलने की नौबत आ गयीं: जैसे -खट्टा-खट्टा रायता, मिर्चे दीनी झोंके, आँखों से आँसू बहें, लगा नाक में छोंक। लगा नाक में छोंक, बराती भूखे भड़ुआ, तोडें किन्तु न टूट सकें, दाँतों से लहुआ। कहूँ 'काका' कविराय, सुनो री चन्दो चच्ची, पूड़ी-चाकला छाप, कचौड़ी भेजी कच्ची। 5

प्रत्येक कवि या कलाकार समाज की परिस्थितियों से प्रभावित होता हैं; और इन परिस्थितियों के अनुसार अपने कार्य में संलग्न रहता है काका का व्यक्तित्व इससे अछूता नहीं रहा है। समाज की सभी विक्रतियों पर इन्होंने व्यंग्य बाण छोड़े हैं। साथ ही इनका काव्य श्रोताओं को हँसता रहता था। काका की आँखों में कुछ न कुछ टटोलती सी गहराई दिखाई देती है। काका की दाढ़ी उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बन गई थी। और इन्होंने दाढ़ी के महत्व को काव्यबद्ध किया है-

काका दाढ़ी राखिए, बिन दाढ़ी मुख सुन,
ज्यों मंसूरी के बिना, व्यर्थ देहरादून।
कहूँ 'काका' नारी सुन्दर लगती साड़ीसे,
उसी भांति नर की सोभा होती दाढ़ी से। 6

काका के जीवन में हास्य व्याप्त हैं वे मंच पर भी हास्य काव्य-पाठ करते थे, साथ ही उनके पारिवारिक जीवन में भी हास्य व्याप्त था।

काका के व्यक्तित्व में संगीत साहित्य, चित्रकला, तीनो ललित कलाओं का त्रिवेणी संगम है। संगीतकार के रूप में काका को बाँसुरी-नादन प्रिय था। उन्होंने हाथरस में संगति कार्यालय की स्थापना की और महत्वपूर्ण संगीत पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। काका के व्यक्तित्व की एक विशेषता और थी काका अभिनय कला में भी पारंगत है। काका शुरु से ही हास्य पात्र का उपनाम अभिनय से ही प्राप्त हुआ।

अभिनय करने के सौकीन थे। काका को 'काका' उपनाम अभिनय से ही प्राप्त हुआ।

काका के व्यक्तित्व की एक विशेषता और है, कि काका के द्वारा 1975 में 'काका हाथसी हास्य पुरस्कार ट्रस्ट' की स्थापना हुई। काका प्रत्येक वर्ष हास्य कवि के रूप में सम्मानित किये जाते रहें। 7

विशेषता :

1. विषयगत : काका ने एक साहित्यकार की पूर्ण भूमिका निभाई हैं। कोई भी विषय काका के व्यंग्य वाणों से अछूता नहीं रहा हैं। समय के अनुसार उन्होंने सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, पारिवारिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, और राजनैतिक आदि सभी विषयों पर व्यंग्य किया हैं, समाज की फैलती विद्रूपताओं, फैशन, पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव और न्याय-व्यवस्था आदि पर व्यंग्य का तीखा प्रहार किया है।

फैशन के नाम पर तो समाज में पाश्चात्य अधानुकर की होड़ मची हुई है। वह सभी उचित अनुचित सभी प्रकार की फैशन करने की होड़ में लगें हुये हैं। जिस पर काका ने व्यंग्य बाण किया हैः

जैसे – गाँव छोड़, चल बम्बई, बेच भैंस औं गाय,
तीस बार सिगरेट पी.बीस बार दी चाय।
बीस नार पी चाय, छोड़कर रसिया –ढोला,
'फिल्मी गीत गाइयो,' पीकर 'कोकाकोला'। 8

समाज की विक्रतियों पर काका ने व्यंग्य का प्रहार किया है। आज न्याय के क्षेत्र में अत्यधिक भ्रष्टाचार का समावेश हो गया है। आज न्यायालयों में सत्य ईमान का को महत्व नहीं रहा है। वहाँ तो धन कमाने की होड़ लगी हुई है। गरीब व्यक्ति की कोई इज्ज़त नहीं है।

जैसे न्याय और अन्याय का, नोट करो डिफरेंस,
जिसकी लाठी बलवती, हाँक ले गया भैंस।
निर्बल धक्के खाएँ, तूती बोल रही बलवान की।

समाज में आर्थिक क्षेत्र की स्थिति अत्यधिक दयनीय होती जा रही है। आर्थिक विषमता मानव जीवन के लिए अत्यन्त हानिकारक है। मनुष्य को अपने जीवन व्यापन के लिए खाद्यपद्धार्थो को जुटाना मुश्किल हो गया है, प्रशानस में भ्रष्टाचार अत्यधिक बढ़ता जा रहा है। कार्यालयों में रिश्वत ने भयानक रूप धारण कर लिया है। जिस पर काका ने व्यंग्य किया है –

रिश्वत रूपी पेड़ को, जोर-जोर झकझोर,
आँधी के ये आम हैं, दोनों हाथ बहोर।
दोनों हाथ बटोर, एक कोठी बनवा ले,
उठा समय से लाभ, भाग्य अपना चमका ले। 9

शितपगत : काका के काव्य में शितपगत विशेषतायें बहुआयामी है। काका के काव्य में हास्य-व्यंग्य में गीत, ग़जल, पैरोड़ी और दोहा आदि सभी माध्यम से व्यंग्य का प्रहार किया है।

जैसे- है वकील बढ़िया वही, ऊँचा वही कहाय,
जिसकी ऊँची फीस सुन, भाग भवक्किल जाय। 10

काका हाथरसी ने चुनाव के समय होने वाले भ्रष्ट्राचार पर पैरोडी गीत पर व्यंग्य किया है :

आज के युग में प्रत्याशी के लिए मतदाता भगवान के समान होता है चुनाव के समय मतदाता की भगवान की तरह पूजा की जाती है।

'वोटर! तेरी सूरत से अलग,
भगवान की सूरत क्या होग,
नेता ही नहीं, मंत्री भी साए में पले तेरे,
सर अपना झुका दूँगा मैं, कदमों के तले तेरे।
बतला दो हमें बेखौफ डियर।
एक वोट की कीमत क्या होगी।' 11

काका हाथरसी के काव्य में भाषा की अनेक विविधता मिलती है। इनके काव्य में अंग्रेजी, उर्दू, बँगला, पंजाबी और ब्रजभाषा के शब्दों का यथास्थान प्रयोग किया गया है। इनकी भाषा में तुकों का प्रवाह हास्य-व्यंग्य की तीव्रता प्रदान करता है।

काका के काव्य की भाषा में उर्दू, बगँला, पंजाबी, ब्रजभाषा और खड़ीबोली आदि का प्रयोग किया गया है। मुहावरों का सटीक प्रयोग किया गया है । दोहें, अंलकार, कुण्डलिया छन्द और चौपाई आदि का प्रयोग किया है। इनका साहित्य विविध अध्ययनों की दृष्टि से श्रेष्ठ है।

बरसाने लाला चतुर्वेदी

(1) मूलनाम : इनका नाम डॉ. बरसाने लाला चतुर्वेदी है। हिन्दी साहित्य के हास्य व्यंग्य के कार्य क्षेत्र में विशिष्ट कवि के रूप में कार्य किया। इनका जन्म 1 अगस्त,

1921, मथुरा उ.प्र. में हुआ था।

शिक्षा-दीक्षा योग्यतायें : शिक्षा के क्षेत्र में इन्होंने एम. ए. एम. काम. एल.एल.बी. पी.एच. डी. लिट आदि उपलब्धियाँ प्राप्त की। हिन्दी साहित्य में विशेष योगदान रहा शिक्षा के क्षेत्र में इनके अनुभव प्राचार्य, शिक्षाधिकारी, सहायक आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन रहने के बाद सेवानिवृत्त हुए। 12

कार्यक्षेत्र : चतुर्वेदी जी ने साहित्य में व्यापक रूप से कार्य किये है। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में शिक्षा एवं साहित्य संबंधी अनेक राष्ट्रीय गोष्ठियों का निर्देशन किया। 1977 में बेलग्रेड, युगोस्लाविया में अंतराष्ट्रीय काव्य समारोह में भारत का प्रतिनिधित्व किया। बी.बी.सी. लंदन पर प्रसारण तथा कुछ विदेशी शिक्षा-संस्थाओं का निरीक्षण करते रहे। भोपाल विश्व विद्यालय की रसिर्च डिग्री कमेटी में शोध निर्देशक के रूप में कार्य किया। और लाइंस क्लब मथुरा के सभापति, रहें आकाशवाणी दिल्ली की सलाहकार समिति के सदस्य रहे के केन्द्रीय माध्यमिक परिषद,दिल्ली की अनेक योजनाओं से जुड़ें रहे साथ ही अनेक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं में कार्य किये। 13

प्रकाशित कृतियाँः 1980 में म. प्र. के राज्यपाल द्वारा डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी अभिनंदन ग्रंथ समपित किया गया। विश्व विद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से हिन्दी हास्य- व्यंग्य कोश का संपादन किया गया।

मासिक पत्रिका नोंक-झोंक, 'जोकर' हिन्दी शिक्षण पत्र आदि का सम्पादन किया।

इनके काव्य हास्य-व्यंग्य काव्य संग्रह हास्य व्यंग्य के विविध रंग संग्रह प्रकाशित होते रहे हैं।

सम्मान एवं पुरस्कार : चतुर्वेदी जी हास्य-व्यंग्य विषय का डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त करने वाले प्रथम व्यक्ति है। इस क्षेत्र में कार्य करने पर अनेंक सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त किये हैं।

सन् 1970 में राष्ट्रपति पुरस्कार से विभूषित पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

सन् 1983 में गिरधारीलाल सरफि ठिठोली पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 14

सन् 1987 में 'चकल्लस' तथा सन् 1980 में पद्मश्री पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

व्यंग्य काव्य की विशेषताएँ : बरसाने लाला चतुर्वेदी ने अपने काव्य में समाज, धर्म, शिक्षण, राजनीति आदि क्षेत्रों में फैली विसंगतियों पर व्यंग्य का प्रहार किया है। इनके

काव्य में संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू और फारसी आदि भाषाओं का प्रयोग मिलता है। मानवीकरण, अत्यानुप्रास, उपमा, रूपम, आदि अलंकारों का प्रयोग मिलता है।

गोपाल प्रसाद व्यास

जन्म : हास्य और के मूर्धन्य साहित्यकार पंडित गोपालप्रसाद व्यास का जन्म 13 फरवरी 1915 परासौली (गाम महमदपुर), मथुरा (उ.प.) में हुआ था।

शिक्षा : इनकी प्रारंभिक शिक्षा पहले परासौली के निकट भवनपुरा में हुई। उच्च शिक्षा में विशारद और साहित्य रत्न की प्राप्ति की।

शैक्षणिक योग्यताएँ : गोपाल प्रसाद व्यास ने शिक्षा के क्षेत्रमें अनेक संपादन किये है - 'साहित्य संदेश, दैनिक 'हिन्दुस्तान', 'राजस्थान पत्रिका', 'सन्मार्ग' में संपादन-कार्य किया तथा दैनिक 'विकासशील भारत' के प्रधान संपादक के रूप में कार्य करते रहे। स्तंभ-लेखन का का कार्य निरतंर करते रहें। ब्रज साहित्य मंडल, संरक्षक। दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन के संस्थापक एवं संरक्षक के रूप में कार्य किया। पुरुषोत्तम दास टंडन हिंदी भवन न्याय समिति के संस्थापन और फिर मंत्री रहें। साथ ही लाल किले के राष्ट्रीय कवि सम्मेलन में भाग लिया। होली के अवसर पर देश भर में महामूर्ख सम्मेलनों का संचालन करते रहें। हिन्दी हास्य-व्यंग्य साहित्य के महान विद्वान के रूप में विख्यात हैं।15

अब तक इनकी 50 से अधिक कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी है।

पुरस्कार : गोपाल प्रसाद व्यास अब तक अनेक सम्मान एवं पुरस्कार की उपलब्धियाँ मिल चुकीं है। भारत सरकार द्वारा पद्मश्री, उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा साहित्यभूषण, हिन्दी अकादमी, दितली से पुरस्कृत, उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन स्वर्णपदक से विभूषित, बंबई की संस्था चकतलस से 'व्यंग्य विशारद' की (उपाधि); 'ठिठोली' पुरस्कार द्वारा हास्य रसावतार की पदवी, वृंदावन की ब्रज अकादमी द्वारा ब्रज साहित्य के भीष्म पितामह घोषित। और साहित्यरत्न 'प्रभाकर', 'साहित्य वारिधि' 'पंडित प्रवर आदि। जैसी अनेक उपलब्धियों से सम्मानित किये गये है।

डॉ. रामप्रसाद मिश्र

जन्म : सोमवार, आश्विन-कृष्ण-4, 1989 (17 सितबर, 1932)

जन्मस्थान : निबंई जिला उन्नाव, उ.प्र. पैतृकस्थानः दौलतपुर, जिला रायबरेली, उ.प्र. शिक्षादिः कानपुर।

शिक्षा : एम.ए. पीएच.डी. (हिंदी)।

अजीविका : शिक्षण (पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, नई दिल्ली-दिल्ली वि.वि. अवकाश प्राप्त।

प्रकाशित ग्रंथ – हिन्दी साहित्य में इन्होंने सभी विधाओं काव्य, उपन्यास, आलोनचा, कहानी आदि सभी पर अपनी काव्य प्रतिभा की लेखिनी चलाई है। इनका काव्य -

1. दृष्टि (22 सर्ग): कवि सभा दिल्ली, उ.प्र. हिंदी सं. लखनऊ, भाषा संगम दुमका द्वारा पुरस्कृत अतिः प्रशसित मानवतावादी महाकाव्य पी.एच.डी. शोधकार्य।

2. वेदायन (12 सर्ग): वैदिककाल पर अकेला ऐतिहासिक-सांस्कृतिक काव्य/ प्रशंसित।

3. मुहम्मद (7 सर्ग) : पैगम्बर-ए-इस्लाम पर अकेला ऐति. सां. काव्य/ प्रशंसित।

4. सार्वभौम (विशाल संग्रह) : मौलिकता, बहुआयामिता इत्यादि के कारण प्रशंसित।

5. कल्पान्त (15 विशाल सर्ग) : महाभारत-परकः प्रशंसित।

6. पुरुषोत्तम (38 सर्ग) : रामायण-परक : प्रशंसित।

इनका पूर्ण रूप से साहित्य में योगदान मिला। इनकी अमूल्य लेखिनी से जीवन पर्यन्त हिन्दी समृद्धि और राष्ट्रवादी मूल्यों की स्थापना की।

इनका अन्य लेखन कार्य इस प्रकार है।

1. **विश्व के सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य** : एकल ग्रंथ, पुरस्कृत, प्रशंसित निबंध
2. **प्रसाद आलोचनात्मक सर्वक्षण** : एम.ए. संस्तृत रहा। (आलोचना)
3. **विश्वकवि होमर और उनके काव्य** : अकेला ग्रंथ/ प्रशंसित (आलोचना)
4. **मौर्ख्यशास्त्र (इडिऑटिक्स)** अकेला ग्रंथ / प्रशंसित (व्यंग्य)
5. **सबसे प्यारा अपना देश (कविताएँ)** : पुरस्कृत, सम्मानित। (बालसाहित्य)
6. **कंगाली के खजाने** : प्रशंसित अलग सहब (संस्मरण)
7. **भटकता पंछी** : प्रशंसितः धारावाहिक प्रकाशन (आत्मकथा)
8. **हिंदू धर्म : फेथ ऑफ फ्रीड्म** : लीक से हटकर (अंग्रेजी)
9. **आँउट लाइंस ऑफ हिंदी लिटरेचर** : लीकसे हटकर (अंग्रेजी)
10. **इंडिआज यूनिटी कलच्र एंड कॉंट्रिल्यूशन** : लोक से हटकर (अंग्रेजी)
11. **ऑफ लाइंफ आफ्फ लाइफ़ (विविध निबंधादि)** : लोक से हटकर (अंग्रेजी) पुरस्कार।

इनकी काव्य श्रेष्ठता के लिए लगभग 50 सम्मान एवं उपाधियाँ मिली।

काव्य लेखन : इनका लेखन 'वाद', 'दल', 'राजनीति' इत्यादि से मुक्त सत्य-

साधना, लाभहीन वाला है। 16

शैल चतुर्वेदी :

नाम : ये हिन्दी साहित्य जगत में शैल चतुर्वेदी के नाम से जाने जाते हैं। इनके पिता का नाम प्रेमनारायण चतुर्वेदी था।

जन्म : इनका जन्म 29 जून 1936, अमरावती (महाराष्ट्र) में हुआ था।

शिक्षा : इनकी शिक्षा स्नातक तक चली। इन्हें हिन्दी, अंग्रेजी मराठी भाषाओं का ज्ञान था।

कार्यक्षेत्र : इन्होंने हिन्दी हास्य-व्यंग्य साहित्य पर अनेक फिल्म पर अभिनय कार्य किये है।

फिल्म.... उपहार, मेरे भैया, हनीमून, संकोच, एजेंत विनोद, कोशिश, चितचोर, मनोकामना, पायल की झंकार, जज्बात, औरत का इंतजाम, इंदिरा, नरसिम्हा, घर जमाई, जवानी-दीवानी, संस्कार, कसम, जिद्द इत्यादि।

दूरदर्शन : दूरदर्शन पर हास्य-व्यंग्य अभिनय के रूप में विशेष योगदान देते रहे है।

जैसे रजनी, कबीर, आँल राउंडर, सबेरे-सबेरे, चाचा गुलशन गुलफाम, ये दुनिया गजब की, मायाजाल, अमृत मंथन, उजाले की ओर, नोकझोंक, सपने अपने-अपने, तारा, हमारे अपने, इंद्र धनुष, जबान संभाल के इत्यादि पर कार्य किये है। 17

प्रकाशित कृतियाँ :- इनके हास्य-व्यंग्य काव्य संग्रह 1. चल गई, 2. बाजार का यह हाल है इसके अतिरिक्त देश की सभी मुख्य पत्रिकाओं में हास्य रचनाओं का प्रकाशन होता रहता है।

पुरस्कार :- इन्हें काका हाथरसी, ठिठोली पुरस्कार आदि से सम्मानित किया गया है।18

गिरिराज शरण अग्रवाल

जन्म : डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल का जन्म 14 जुलाई 1944 संभल (मुरादाबाद) उ.प्र. में हुआ था।

परिवार परिचय :- इनके पिता का नाम श्री रघुराज शरण अग्रवाल और माता का नाम श्रीमती कमलादेवी था।

शिक्षा :- इनकी शिक्षा एम. ए. पी.एच.डी. आगरा विश्वविद्यालय से संर्पूण हुई।

कार्यक्षेत्र : रीडर एवं अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिंदी एवं शोध विभाग, वर्तमान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिजनौर (उ.प्र.)। साथ ही अनेक संस्थाओं में कार्य करने में संलग्न रहें

-सचिव, हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर। निदेशक, शोध संस्थान बिजनौर। पूर्व मंडलाध्यक्ष, रोटरी अंतराष्ट्रीय मंडल 3100 (2001-2002) चेयरमैन, मंडलीय पोलियो प्लस समिति, रोटरी मंडल 3100 (2002-2003)

मंत्री, जिला अपराध निरोधक कमेटी, बिजनौर। सदस्य, जिला मानवाधिकार समिति, बिजनौर। अध्यक्ष, के. एल. वाल उपवन (बाल शिक्षण संस्थान) बिजनौर।

सदस्य, भारतीय हिंदी परिषद इलाहाबाद (उ.प्र.)। अजीवन सदस्य, अखिल भारतीय हिंदी प्रकाशक संघ, दिल्ली।

पूर्व उपाध्यक्ष एवं सदस्य, इंटरनेशनल गुडविल सोसायटी आफ इंडिया, बिजनौर चैप्टर।

पूर्व सचिव, काका हाथरसी हास्य पुरस्कार ट्रस्ट, हाथरस (उ.प्र.)।19

डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल ने हिन्दी साहित्य के सभी क्षेत्रों पर व्यंग्य लेखन किया है -

1. शिक्षा-व्यवस्था पर व्यंग्य
2. पुलिस-व्यवस्था पर व्यंग्य
3. चिकित्सा व्यवस्था पर व्यंग्य
4. न्याय व्यवस्था पर व्यंग्य
5. सामाजिक-व्यवस्था पर व्यंग्य
6. राजनैतिक परिवेश पर व्यंग्य
7. पारिवारिक जीवन पर व्यंग्य
8. साहित्यिक परिवेश पर व्यंग्य
9. मानव चरित्र के व्यंग्य
10. श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य कविताएँ,
11. श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य कहानियाँ
12. श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य निबंध
13. श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य एकांकी
14. काका हाथरसी हास्य रचनावली (पाँच भाग)
15. पछिले दशक की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य एकाकी
16. पिछले दशक की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताएँ
17. पिछले दशक की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कहानियाँ

आदि रचनाओं पर अपनी धारावाहिक कलम चलाते रहें है। और हिन्दी जगत

जगत में ख्याति प्राप्त की। 20

प्रकाशित कृतियाँ : हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं पर इनका लेखन मिलता है गीत, ग़ज़ल, कहानी, एकांकी, निबंध, हास्य-व्यंग्य, बालसाहित्य एवं सामालोचना।

इनकी पहली पुस्तक 'तीर और तरंग' नाम से 1964 में प्रकाशित हुई। इसमें जनपद मुरादबाद के काव्यकारों का परिचयात्मक विवरण, मिलता है, 1996 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाओं से लेकर 2004 तक की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य काव्य संग्रह प्रकाशित होते रहे हैं। बाबू झोलानाथ (1994) व्यंग्य, राजनीति में गिरगिटवाद(1997) व्यंग्य।

पत्रकारिता : पत्र-पत्रिकाओं में भी इनका लेखन कार्य निरन्तर रहा।

प्रधान संपादक 'शोध दिशा' (मासिक) पत्रिका विशिष्ट प्रतिनिधि (बिजनौर एवं दिल्ली) चिंगारी (हिंदी दैनिक)।

पुरस्कार एवं सम्मान :- उ.प्र. युवा साहित्यकार संघ द्वारा 'सरस्वती श्री' (1982)

तुलसी पीठ कासंगज द्वारा 'विधावारिधि' (1984)

विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ गांधीनगर द्वारा 'विद्यासागर' (1984)

रोटरी, अंतर्राष्ट्रीय द्वार अनुशसां पुरस्कार (1984)

अखिल भारतीय टेपा सम्मेलन, उज्जैन द्वारा सम्मानित (1992)

हिंदी अंतराष्ट्रीय विकास प्रवर्तक लंदन की हाथरस शाखा के तत्वाधान में अभिनंदन (1992)व्यंग्य कृति 'बाबू झोलानाथ' पर उ.प्र. हिंदी संस्थान लखनऊ का अनुशंसा पुरस्कार (1997)

उत्तर प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के हीरक जंयती समारोह में 'अभिव्यंजना' (उत्तर प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन की इकाई) द्वारा विशिष्ट सम्मान (1997)

मानवाधिकार : दशा और दिशा पुस्तक पर राष्ट्रीय मानवाधिकार का प्रथम पुरस्कार (1988)आयोग, नई दिल्ली (भारत सरकार) का प्रथम पुरस्कार (1998)

सहस्राब्दी विश्व हिंदी सम्मेलन द्वारा 'राष्ट्रीय हिंदीसेवी' सहस्राब्दी सम्मान (2000); 'आओ अतति में चलें पुस्तक पर उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का सूर पुरस्कार (2001);

अखिल भारतीय साहित्य कला मंच द्वारा सम्मान (2001) 'समन्वय' सहारनपुर द्वारा सारस्वत सम्मान (2003) आदि पुरस्कार एवं सम्मान से विभूषित किये गये। 21

कालीचरण गौतम

नाम : कालीचरण गौतम

जन्म : 25 जुलाई 1938 ई. ग्राम-गुम्मट तख्त पहलवान, आगरा जनपद के अन्तर्गत एक किसान परिवार में हुआ था। 22

प्रकाशित कृतियाँ : नारी शिक्षित, शिक्षित देश, और दीप जल उठे, सुखी परिवार, व्यवस्था, स्कूल पुराण, एक हरिशचन्द्र और, शिक्षा है अधिकार हमारा, नई चेतना नई दिशाएँ, दहेज एक अभिशाप, चिंतन, नशा ही मृत्यु, अनेंकतामें एकता, सांड़ का व्याह, असत्यमेव जयते।

इनके काव्य में राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, और धार्मिक आदि सभी विषयों पर व्यंग्य का प्रहार किया है। 23

कवि-चिरंजीत

नाम : चिरंजीत

जन्म : 18 दिसंबर 1919 को हुआ था।

कार्यक्षेत्र : इनकी साहित्यिक यात्रा का प्रारम्भ 1938 से लेकर 1940 तक दिल्ली में पत्रकारिता, रेडियो लेखन के रूप में चला।

कवि-सम्मेलन और रंगमंच से जुड़े रहे। पत्र-पत्रिकाओं में 'साप्ताहिक वीर अर्जुन', 'साप्ताहिक जन सत्ता', और 'मासिक मनोरंजन' का सम्पादक करते रहे।

नाटककार के रूप में चर्चित और आकाशवाणी के केन्द्रीय नाटक विभाग के चीफ प्रोड्यूसर के पद पर कार्य किया।

दिसंबर सन् 1979 में रिटायर होकर इन्होंने अनेक प्रकारसे साहित्य को योगदान दिया है।

1965 तथा 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्धों के दौरान प्रसारित धारावाहिक व्यंग्य-नाटक 'ढोल की पोल' से सर्वाधिक ख्याति प्राप्त की है।

1984 में दूरदर्शन से जुड़कर अनेक धारावाहिकों की रचना की।

'दादी माँ जागी' के कारण पारिवारिक धारावाहिक विधा के पुरोधा कहलाए।

हिन्दी साहित्य में इन्होंने सभी दिशाओं पर अपनी लेखनी चलाई है।

प्रकाशित कृतियाँ : इन्होंने हिन्दी साहित्य के नाटक, कविता, उपन्यास-सभी क्षेत्रों में लेखन कार्य किये है। हास्य-व्यंग्य तथा बाल-साहित्य की लगभग तीन दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। अनेक पुस्तके पुरस्कृत हुई, और विभिन्न विश्व-विद्यालयों में

इनके नाटक पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये गये। इनके साहित्य पर शोध कार्य हुए।

सम्मान एवं पुरस्कार : पद्मश्री से 1972 में अलंकृत। हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से 'साहित्य महोपाध्याय' और 'साहित्य वाचस्पति' की उपाधियों से सम्मानित हुए।

हिंदी अकादमी, दिल्ली और भाषा विभाग, पंजाब द्वारा सम्मानित किये गये।

कानपुर के 'भारतीय बाल-कल्याण संस्थान' से 'बाल-साहित्य' की उपाधि मिली। 24

कवि मिश्रीलाल जायसवाल

इनका जन्म 11 मई 1919 को हुआ था।

शिक्षा : इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.एस. सी. की उपाधि प्राप्त की।

कृतियाँ : साहित्य की सभी विधाओं पर इन्होंने लेखन कार्य किया।

'चौराहे की बात', 'हर शाख पे उल्लू बैठा है' 'मिश्री लाल ज़यसवाल की क्षणिकायें'।

इनमें, राजनैति, सामाजिक, साहित्यिक, धर्म पर व्यंग्य का तीखा प्रहार मिलता है।

सम्मान एवं पुरस्कार : अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन नई दिल्ली द्वारा 'समन्वयश्री' नगरपालिका कटनी द्वारा 'नागरिक अभिनंदन' आदि पुरस्कारों से इन्हें सम्मानित किया गया है। ये मिश्रीलाल जायस्वाल पुरस्कार के संस्थापक भी रहे। 25

कवि-जैमिनी हरियाणवी

नाम : जैमिनी हरियाणवी

जन्म : 19 मार्च, सन् 1921 को हुआ था।

शिक्षा : इनकी शिक्षा एम. ए. बी.टी.सी. तक रही हैं।

प्रकाशित कृतियाँ : 'गीत फैशनी गाओ', 'हरियाणवी गीत', 'वसमोर', 'नई बीमारियाँ', 'नए इलाज', 'कसम है आजादी की'। इनकी कृतियों में सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, शैक्षणिक तथा व्यक्तिगत जीवन से संबन्धित विसंगतियों पर इन्होंने व्यंग्य प्रहार किया है। हिन्दी साहित्य के कार्य करने में निरन्तर संलग्न रहे हैं। 26

बौड़म लखनवी

नाम : इन्दरचन्द्र तिवारी

जन्म : 5 जून 1933 (बाराबंकी) लखनऊ में हुआ था।

शिक्षा : एम. ए. हिन्दी

प्रकाशित कृतियाँ : 'बौडम बसंत', 'अनोखी यात्राये', 'विचित्र जीव-जन्तु', 'जब वे मौत से मिलने चले,' (नाल साहित्य), 'जय बागला' (उपन्यास) 'हरीफ कण' 'है प्रेम जगत में सार' (आध्यात्म) हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं पर इन्होंने अपनी कलम चलाई और राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक आदि सभी विषयों पर व्यंग्य का सशक्त प्रहार किया है। 27

डॉ. किशोर काबरा

मूलनाम : डॉ. किशोर काबरा में हुआ था.

जन्म : इनका जन्म 26 दिसम्बर 1934 मन्दसौर (म.प्र.) में हुआ था।

शिक्षा : इनकी शिक्षा की विस्तृत जानकारी इस प्रकार है।

1. मैट्रिक, मध्यप्रदेश बोर्ड, भोपाल-द्वितीय श्रेणी-1950
2. इण्टरमीडिएट : मध्यप्रदेश बोर्ड,भोपाल द्वितीय श्रेणी 1952.
3. बी.ए. विक्रम विश्व विद्यालय उज्जैन द्वितीयश्रेणी 1962
4. बी.एड. सागर विश्वविद्यालय, सागर प्रथम श्रेणी 1965
5. एम. ए. विक्रम विश्व विद्यालय, उज्जैन द्वितीयश्रेणी 1967
6. पी.एच.डी. गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदावाद 1972.

अन्य उच्च शिक्षा : साहित्यरत्न हि.सा. संस्थान इलाहाबाद द्वितीय श्रेणी- 1958. में किया।

कार्यक्षेत्र : इनका कार्य क्षेत्र व्यापक रूप से मिलता है। इन्होंने अपने जीवन में बड़ी लग्न के साथ कार्य किया है। 1954 से 1955 तक म. प्र. खादी ग्रामोधोग द्वारा संचालित कंबल केन्द्र, जावरा में सुपरवाइज़र में कार्यरत रहें।

1955 से 1968 म.प्र. शिक्षा विभाग द्वारा संचालित दलौद कनघट्टी, मल्हारगढ़, रामपुरा आदि स्थानों के विद्यालयों में हिन्दी शिक्षक के रूप में कार्य किया।

1968 से 1988 केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा संचालित अहमदावाद, वल्लभ विद्यानगर, हरिद्वार आदि स्थानों के विद्यालयों में स्नातकोत्तर हिन्दी शिक्षक के रूप में कार्य किया 1960 से 1900 तक केन्द्रीय विद्यालय संगठनद्वारी संचालित अहमदावाद, वल्लभ विद्यानगर, हरिद्वार आदि स्थानों के विद्यालयों में स्वातकोत्तर हिन्दी शिक्षक अप्राचार्यके पद पर पहुँचकर सेवा से त्याग-पत्र दिया। 1988 से हिन्दी साहित्य की सेवा में पूरी तरह से समर्पित हो गयें आज तक लगातार हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अपना योगदान दे रहे हैं। इस क्षेत्र में ये विशेष रूप से जाने जाते हैं।

इन्होंने व्यंग्य काव्य के द्वारा राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक सभी पर बढ़नेवाली विद्रूपताओं पर तीखा प्रहर किया है।

(क) कृतियाँ

1. जलते पनघट : बुझते मरघट (1942)
2. सालेकी कृपा (1975)
3. सारथी मेरे रथ को लौटा ले (1976)
4. टूटा हुआ शहर (1990)
5. हाशिये की कविताएँ (1995)
6. श्रतुमती है प्यास (1990)
7. मैं एक दर्पण हूँ (1996)
8. चंदन हो गया हूँ (1999)

(ख) सतसई - किशोर सतसई (1997)

(ग) प्रबंध काव्य-महाकाव्य

(1) उत्तर महाभारत (1990)

(2) उत्तर रामायण (1994)

(3) उत्तर भागवत (2004)

इन्होंने हिन्दी साहित्य में हास्य-व्यंग्य के साथ-साथ प्रबंधकाव्य, शोधप्रबंध, बाल-साहित्य सभी पर काव्य प्रतिभा के द्वारा लेखिनी चलाई है।

डॉ. किशोर काबरा ने हिन्दी के सभी काव्य संग्रहो पर दृष्टिपात किया है।

लघुकथा संग्रह :-

1. एक चुटकी आसमान 1986
2. एक टुकड़ा ज़मीन 1991
3. एक टुकड़ों जमीन (गुजराती) 1995
4. बूँद-बूँद कड़वा सच (1997)
5. टीपे-टीपे कडवुं सच (गुजराती) 1997

अनुवाद :

6. भागवद प्रसादी 1980
7. हरि का मार्ग 1980 और मुक्ता आदि प्रकाशित हुये है।

संपादन एवं संकलन :

8. पखेरु पश्चिम के 1993

9. बूँद-बूँद घट में 1994 और प्रकाशित हुए हैं।

डॉ. किशोर काबरा पर आधारित ग्रंथ एवं शोध-प्रबंध भी प्रकाशित किये गये है।

1. डॉ. किशोर काबरा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व डॉ. घनश्याम अग्रवाल

2. नरो वा कुंजरो वाः परंपरा और युगबोध - श्रीमती पैणपत्नी

3. डॉ. किशोर काबरा के खण्डकाव्य- दीपक पण्डया

4. आधुनिक मनोविज्ञान के परिप्रेश्य में डॉ. किशोर काबरा के प्रबंध-काव्य डॉ. सत्यनारायण

5. धनुषभंग : एक अनुशीलन - डॉ. घनश्याम अग्रवाल

6. डॉ. किशोर काबरा -व्यक्ति और साहित्य एक अनुशीलन डॉ. प्रमोद डॉ.किशोर काबरा का व्यक्तित्व बहुआयामी है। ये अपने जीवन में पूर्णरूप से साहित्य की सेवा में संलग्न रहे हैं। और इन्हें अनेक सम्मान एवं उपाधियों से विभूषित किया गया है।

उपाधियाँ :

1. अन्तराष्ट्रीय सम्मोनोपाधि महाविद्यालय, मथुरा से 'साहित्यकालाश्री' (आध्यात्मिक साहित्यिक संस्था, रामपुर से काव्यप्रत)

2. साहित्यिक सांस्कृतिक कला संगम, प्रतापगढ़ से 'साहित्य शिरोमणी'

3. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से 'विधावाचस्पति'

4. अ.भा.सा.आ. मथुरा से 'राष्ट्र भाषा' 'आचार्य' आदि उपलब्धियाँ प्राप्त की।

पुरस्कार :

1. 'कादम्बिनी' नवगीत प्रतियोगिता दिल्ली 1976.

2. परिताप के पाँच क्षण - उ.प्र. हि. सं. लखनऊ 1980-2500

3. नरो वा कुंजरो वा-महाकवि रा.आ. पुरस्कार कानपुर 1987.

4. उत्तर महाभारत-अर्चना पुरस्कार, कलकत्ता 1992

5. गु.सा. संगम, अहमदावाद, जयशंकर प्रसाद 1994

6. उत्तर रामायण-मारवाड़ी सम्मेलन, मुंबई 1994

7. खटट्रा अंगूर -राष्ट्रीयबाल पुरस्कार, एन.सी. ई. आर. टी. नई दिल्ली।

8. उ. प्र. हि. संस्थान, लखनऊ, सौहदि पुरस्कार 1998.

9. गुजरात हिन्दी विद्यापीठ अहमदावाद, हिन्दी गरिमा सम्मान 1999.

10. हिन्दी साहित्य अकादमी, गाँधीनगर, हिन्दी सेवी पुरस्कार 1999

11. पं. दीनदयाल उपाध्याय पुरस्कार 1999.

12. गोकटेज हिन्दी साहित्य सेवा सम्मान सुरत 2000

13. गुजरात हिन्दी समाज विकास परिषद, अहमदावाद 2000

14. राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग सम्मेलन, वड़ोदरा 2002

कार्यक्षेत्र : विविधा

1. शब्द-चित्रों की विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शनियाँ।

2. 'धनुषभंग' खण्डकाव्य के विभिन्न यूनिवर्सिटीयों में पाठ्यपुस्तक के रूप में स्वीकृत किया गया है।

3. 'अभिनव भारती' और गीतांजलि नामक संस्थाओं की स्थापना।

4. आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से अत्याधिक बार रचनाओं का प्रसारण।

5. 'साहित्यालोक', हिन्दी साहित्य परिषद, हिन्दी साहित्य अकादमी, आदि संस्थाओं में न्यासी, पदधिकारी एवं सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में कार्य किया।

6. 'भाषा-सेतु' त्रैमासिक पत्रिका का छह वर्षो तक उप-संपादन

7. कई पत्र-पत्रिकाओं में कॉलम-लेखन एवं सहस्राधिक रचनाओं का प्रकाशन किया।

8. 'बाल-रामायण' कृति का ध्वनि-मुद्रण।

9. योग साधना ध्वनी मुद्रण एवं वी.डी. आदि क्षेत्रों अपनी काव्य प्रतिभा से योगदान किया है। 28

अल्हड़ बीकानेरी

मूलनाम : इनका पूरा नाम श्याम लाल शर्मा अल्हड़ बीकानेरी है।

जन्म : इनका जन्म 17 मई, 1937 गाँव बीकानेर, जिला रेवाड़ी (हरियाणा) में हुआ था।

प्रकाशित कृतियाँ : अल्हड़ बीकानेरी बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। इन्होंने साहित्य की सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई और हास्य व्यंग्य काव्य के द्वारा राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक सभी पर बढ़ती विद्रुपताओं पर व्यंग्य का तीखा प्रहार किया है।

हास्य-व्यंग्य काव्य संकलन

1. 1997 में तीसरा काव्य संकलन अभी हँसता हूँ तथा चौथा काव्य संकलन 'अब तो आँसू पोछ' प्रकाशित हुआ।

2. 'भज प्यारे तू सीताराम'

3. 'घाट-घाट घूमे' '29'

कार्यक्षेत्र : 1962 में गीत-ग़ज़ल में 'माहिर'बीकानेरी के रूप में उदित हुए।

1967 में शास्त्रीय संगीत (बोकल)में डिप्लोमा हास्य-व्यंग्य में अल्हड़'' बीकानेरी के नाम से स्थापित है।

सम्मान एवं पुरुस्कार :

1. गिरधारीलाल सर्राफ युवा ठिठोली पुरस्कार -1981.
2. लायंसक्लब, दिल्ली द्वारा श्रेष्ठ हास्य-कवि के रूप में-1982 में सम्मानित किये गये।
3. स्वनिर्मित हरियाणवी फीचर फिल्म 'छोटी-साली' 1986.
4. काका हाथरसी पुरस्कार द्वारा सम्मानित एवं 'हास्य-रत्न' की उपाधि से अलंकृत - 1987
5. थाईलैंड तथा सिंगापुर के प्रवासी भारतीयों द्वारा काव्य पाठ के लिए आमंत्रित एवं प्रशंसित -1990.
6. हास्य-कविता में विशिष्ट योगदान के लिए 'अखिल भारतीय नागरिक परिषद सम्मान' 1993.
7. 15 मई, 1996 को राष्ट्रपति भवन में 'काका हाथरसी' स्मारक कवि सम्मेलन में राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा द्वारा अभिनंदित किये गये।

हास्य-व्यंग्य साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट कवि के रूप में जाने-जाते है। हिन्दी साहित्य जगत में ख्याति प्राप्त की।

ओमप्रकाश आदित्य

नाम : ओमप्रकाश आदित्य

जन्म : 5 नवंबर सन् 1936 रणसीका (हरियाणा) में हुआ था।

शिक्षा : एम. ए. हिन्दी साहित्य

कार्यक्षेत्र : 1961 से 1968 तक मदर्स इंटरनेशनल स्कूल, अरविंद आश्रम, दिल्ली में हिंदी विभागाध्यक्ष पद पर कार्यरत रहे। तत्पश्चात् पद त्यागकर हिन्दी साहित्य में स्वतंत्र लेखन में कार्य करने लगे। और एक हास.-व्यंग्य कवि के रूप में स्थान प्राप्त किया।

प्रकाशित कृतियाँ :

1. 'तोता एण्ड मैना'
2. 'इधर भी गद्ये है, उधर भी गधें है'

3. 'माडर्न शादी'

4. 'घट-घट व्यापी भ्रष्टाचार'

5. 'थर्ड डिवीज़न'

6. 'गौरी बैठी छत पर'

7. 'हरियाणा के तीन त्रिशंकु'

8. 'उल्लू का इण्टरव्यू'

9. उड़ गई चिड़ियाँ

इनकी कृतियों में सामाजिक, राजनैति, सांस्कृति विकृतियों का पर्दाफाश किया गया है।

सम्मान एवं पुरस्कार :

1. 'काका हाथरसी पुरस्कार' 1975

2. 'ठिठोली पुरस्कार' 1980

3. 'साहित्यश्री' 1990

4. 'अट्टहास' 1997

5. 'काका हाथरसी स्मृति पुरस्कार' दिल्ली सरकार 1997 आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

देश-विदेश :

हिन्दी हास्य- व्यंग्य के माध्यम से इन्होंने देश-विदेशों में ख्याति प्राप्त की।

अमेरिका, इग्लैण्ड, फ्रांस, नैतिबजयम, हालैण्ड, रूस, हाँगकाँग, सिंगापुर, माँरिशस, थाइलैण्ड, नेपाल, आदि यात्रायें करके हिन्दी साहित्य में योगदान किया।30

रामकिशोर मेहता

नाम : रामकिशोर मेहता

जन्म : 20 सितम्बर सन् 1947 ग्राम- बड्डा बाजदिपुर, बुलन्दशहर (जनपद) में हुआ था।

कार्यक्षेत्र : हिन्दीसाहित्य की सभी विधाओं पर इन्होंने अपनी प्रतिभाशाली लेखनी चलाई। कविता, कहानी, नाटक, व्यंग्य निबन्ध सभी में इनके संग्रह लिखे गये है। हास्य-व्यंग्य का सहारा लेकर समाज की विकृतियों पर व्यंग्य का तीखा प्रहार मिलता है।

प्रकाशित कृतियाँ :

1. प्रजातंत्र का चौथा पाया (नाटक संग्रह) 1988
2. 'गिद्धभोज' (कविता संग्रह हास्य-व्यंग्य) 1990

प्रकाशित लेख :

1. नवभारत टाइम्स
2. आज
3. नवभारत
4. दैनिक भास्कर
5. उद्भावना
6. सानुबंध
7. नई गुदगुदी (पत्रिका)

आदि पत्र-पत्रिकाओं में इनके लेख प्रकाशित होते रहे हैं। 31

डॉ. श्री राम ठाकुर 'दादा'

नाम : डॉ. श्री राम ठाकुर 'दादा'

जन्म : 28 जनवरी सन् 1946 में बांरगी सोहापुर जिला होशंगाबाद (म.प्र.) में हुआ था।

शिक्षा : एम. ए. पी.एच.डी. (संस्कृत)

अन्य उच्च शिक्षा-साहित्य रत्न (हिन्दी) शोध प्रबंध स्वातंत्र्योत्तर संस्कृत काव्य-व्यंग्य संस्कृत में व्यंग्य सेटायर पर समूचे विश्व में प्रथम शोध कार्य किया।

प्रकाशित कृतियाँ : हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं कविता, कहानी, नाटक, लघुकथाये आदि पर 'दादा' ने अपनी बहुआयामी प्रतिभा प्रस्तुत की है। और देश में होने वाले भ्रष्ट्राचार को उजागर किया है।

1. 'दादा के छक्के' (हास्य-व्यंग्य काव्य संग्रह) पंचायत एवं समाज सेवा विभाग द्वारा पुस्तकालयों हेतुक्रम।
2. अभिमन्यु का सत्ताव्यूह -(लघुकथा संग्रह) अनेक शोध प्रबंधों में उल्लेखित की गई कृति।
3. ऐसा भी होता है (व्यंग्य निबन्ध) म.प्र. साहित्य परिषद का पदमुलाल-पुन्नालाल बक्शी पुरुस्कार प्राप्त किया।
4. पच्चीस घंटे (व्यंग्य उपन्यास) लिखने पर म. प्र. प्रेमचन्द जन्म शताब्दी समिति द्वारा

सम्मानित किये गये।

5. मेरी प्रतिनिधि व्यंग्य रचनाये (गद्य) लेखन पर लोक शिक्षण संचालक म. प्र. द्वारा विशेष खरीद योजना में किये है।

6. 'वसे पर्स,' 'पिल्ला' और पति (व्यंग्य लेख) पर म. प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा वागश्विरी पुरस्कार प्राप्त।

संपादन : साहित्य निर्देशिका, पोपट, अभिव्यक्ति पत्रिकाओं का मानसेवा के रूप में संम्पादन किया। डॉ. श्रीराम ठाकुर दादा को साहित्य की सेवा के लिये अनेंक सम्मान एवं पुरस्कारों से विभूषित किया गया। देश के अनेंक नगरों में आयोजित कवि सम्मेलनों में काव्य-पाठ एवं अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मान व अभिनंदन किया गया।

कार्यक्षेत्र : रईत टाउन दूरभाषा केन्द्र जबलपुर में सीनियर टेलीफोन सुपरवाइझर का कार्य किया। 'नर्मदा संचार' महाप्रबंधक दूरसंचार कार्यालय जिला जबलपुर में संपादक का कार्य किया।

'दादा' ने हिन्दी साहित्य की हास्य-व्यंग्य काव्यधारा से देश में फैलती विकृतियों, विद्रुपताओं पर व्यंग्य का सशक्त प्रहार किया है।

जैसे- 'एक समाचार के अनुसार वर्ष 1980-81 में रेल दुर्घटनाओं में 172 यात्री मारे गये तथा 615 घायल हो गये। इन दुर्गटनाओं के कारण तीन करोड़ रु. की क्षति रेल्वे को हुई।'

फिर वर्ष 1982 को विकलांग वर्ष के रूप में मानने हेतु घोषणा हो गई, तब एक कविता ने जन्म लिया -

'बढ़ई हुई
रेल्वे दुर्घटनाओं से चिन्तित होकर
एक पत्रकार ने
रेल्वे के वरष्ठि अधिकारी से पूछा-
पिछले दिनो आप
क्या रवैया अपना रहे थे?
अधिकारी ने उत्तर दिया-
हम विकलांग वर्ष मना रहे थे
कुछ बने हुए थे कुछ को बना रहे थे।'

इनकी कविताओं में समाज की विद्रूपताओं का व्यंग्य के द्वारा पर्दाफास किया गया है। 32

आदित्य शर्मा (चेतन)

नाम : आदित्य शर्मा (चेतन)

जन्म : 10 फरवरी सन् 1962 ग्राम रेंढर, जिला-जालौन (उ.प्र.) में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री राम कर्ण शर्मा था।

शिक्षा : इनकी शिक्षा एम.एस.सी. (बनस्पति शास्त्र) एल.एल. बी.बी.बी तक रही है।

कार्यक्षेत्र : (उपलब्धियाँ)

लगभग 20 वर्षों से आकाशवाणी छतरपुर से रचनाओं का प्रसारण हो रहा है।

अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों में काव्य पाठ एवं मंच संचालन किया।

भूतर्पूव छात्रसंघ सचिव, महाराजा महाविद्यालय छतरपुर भूतपूर्व व्याख्याता, प्रणवानंद महाविद्यालय छतरपुर। विभिन्न कर्मचारी संगटनों के अध्यक्ष/सचिव/ संरक्षक पदों का निर्वाह किया है।

हिन्दी साहित्य की विधाओं, गीत, ग़ज़ल छंद, छरछंद, छकड़ा, सवैया, दोहा, मोहा, नई कविताएँ, सभी पर अपनी काव्य प्रतिभा को दर्शाया है। इनके लेखों विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, समाचारपत्रों, में प्रकाशित होते रहते हैं।

सम्मान एवं पुरस्कार :

हिन्दी साहित्य में विशिष्ट कार्य करनें पर विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया है। तथा नगर पालिका परिषद छतरपुर द्वारा सम्मान प्राप्त किया।

संप्रति : म.प्र. विद्युत मण्डल छतरपुर में शासकीय सेवा सचिव, संतोष सिंह बुन्देला साहित्य परिषद, आदित्य शर्मा 'चेतन' ने हिन्दी साहित्य में हास्य-व्यंग्य साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया है। इनके साहित्य का जो रूप (लोक प्रचलितरूप) समाज के समक्ष प्रस्तुत हुआ है। अन्यत्र मिलना बहुत जटिल है।

इनकी काव्य भाषा सुस्पष्ट है। कहीं भीं नासमझी से अलंकृत नहीं हो पायी है। इनकी भाषा में दोहा के लिए मोहा, ग़ज़ल के लिए मजल और छंद के लिए छकड़ा, ये नवीनता का प्रयोग मिलता है।

इन्हें सभी रसों की सिद्धियाँ प्राप्त है। वीर रस से लेकर हास्य रस तकका स्पर्श रसानुभूति की सहजता और तीव्रता उत्पन्न करता है।

योगेन्द्र मौद्गिल

नाम : योगेन्द्र मौद्गिल

जन्म : 25 सितंबर, 1963, करनाल में हुआ था।

शिक्षा : इनकी सिक्षा हाईस्कूल तक चली।

कार्यक्षेत्र : ये अपना निजी व्यवसाय करते है। हिन्दी हास्य-व्यंग्य काव्य पर इन्होंने सच्छन्द कविता (दोहे, ग़ज़ले,धनाक्षरी) आदि का लेखन कार्य किया है।

प्रकाशित कृतियाँ

1. स्वरचित पुस्तकें : वर्ष 2000 से 2005 तक ये पुस्तक प्रकाशिथ हुई।
2. हास्यमेव जयते (हास्य-व्यंग्य कविताएँ)
3. मंज़र मंज़र अंगारे (ग़ज़लें)
4. धूल म्हं लट्ठ (हरियाणवी हास्य-व्यंग्य संग्रह)
5. देश का क्या होगा (ओज एवं व्यंग्य कविताएँ)

प्रकाशित संपादित पुस्तकें : (वर्ष 2000 से 2005 तक)

6. हंगामा एक्सप्रेस (हास्य-व्यंग्य कविताएँ)
7. व्यंग्य भरे हंसगुल्ले (हास्य-व्यंग्य कविताएँ)
8. हास्य कवि दरबार (हास्य-व्यंग्य कविताएँ)
9. व्यंग्यमेव जयते (हास्य-व्यंग्य कविताएँ)
10. चर्चित व्यंग्य लघुकथाएँ (लघु कथाएँ)
11. सबरंग मुशायरा (ग़ज़लें)

इसके सात ही पत्र-पत्रिकाओं का संपादन कार्य निरन्तर जारी है-

हरियाणा की एकमात्र काव्य-पत्रिका अनियतकालीन कलमदंश के 7 अंक प्रकाशित हो चुके है और निरन्तर प्रकाशित हो रहे हैं।

एवं देश भर की प्रायः सभी स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में 800 से अधिक कविताएँ प्रकाशित हो चुकी है और 60 से अधिक काव्य संकलनों में उल्लेखनीय सहयोग प्रदान किया है।

डायमण्ड पॉकेट बुक्स द्वारा 'वर्ष की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य वार्षिकी' में 1982 से प्रतिवर्ष प्रकाशित होती है।

06 जून 2000 से 5 दिसम्बर 2000 तक दैनिक भास्कर के हरियाणा संस्करण में काव्य स्तम्भ 'तरकश' का दैनिक लेखन।

कार्यक्षेत्र : मंचीय हास्य-व्यंग्य कवि के रूप में भारत भर में काव्य-पाठ करने में सहयोग प्रदान किया है।

पानीपत में पैंतीस से अधिक अखिल भारतीय कविसम्मेलनों के सफल संयोजन के रूप में सहयोग दिया।

सब टी.वी., जीटीवी, सिटि चैनल,आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से नियमित कवितापाठ करते हैं।

पुरस्कार : देश भर में अनेक संस्थाओं एवं क्लबों द्वारा सम्मान प्राप्त किया। कवि योगेन्द्र मौदगिल ने हास्य-व्यंग्य काव्य के क्षेत्र में अनोखी छवि प्राप्त की है। 34

कवि– हुल्लड़ मुरादाबादी

नाम – इनका नाम सुशील कुमार चड्ड़ा है। हिन्दी हास्य-व्यंग्य साहित्य के क्षेत्र में ये हुल्लड़ मुरादाबादी तथा 'सब्र' के नाम से प्रसिद्ध है।

जन्म : 29 मई 1942 में गुजराँवला (अब पाकिस्तान) में हुआ था।

शिक्षा : इनकी शिक्षा बी.एस.सी. एम.ए. हिन्दी साहित्य तक चली

प्रकाशित कृतियाँ :

1. 'सत्य की साधना'
2. 'हुतलड़ की हरकतें'
3. 'हुल्लड़ की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य'
4. 'अतनी ऊँची मत छोड़ों'
5. 'क्या करेंगी चादँनी'
6. 'ये अन्दर की बात है,'
7. 'त्रिवेणी'
8. 'तथा कथित भगवानों के नाम'
9. 'हुतलड़ का हुल्लड़'
10. 'हज़ाम की हज़ाम' 35

आदि कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी है, 'हुतलड़ मुरादाबादी' हास्य-व्यंग्य के मूर्धन्य कवि है। हिन्दी साहित्य में इन्होंने अपना पूर्ण रूप से सहयोग दिया है।

सम्मान एवं पुरस्कार : हुतलड़ मुरादाबादी अपनी कार्य कुशलता के लिए कोई बार सम्मानित किये गये है।

1. माध्यम संस्थान लखनऊ द्वारा 1998 में इक्कीस हजार के इटटहास शिखर सम्मान से विभूषित।
2. 1997 में महाकवि निराला सम्मान से अलंकृत कलाश्री से सम्मानित किये गये।
3. 1984 में काका हाथरसी पुरस्कार तथा हास्यरत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया है।

4. टी.ओ.बाई.पी. पुरस्कार इण्डियन जेसीज कलाश्री तथा ठिठोली पुरस्कार मिला।

अभिनय : इन्होंने अपने जीवन में लेखन कार्य के साथ-साथ अभिनय भी किये गये है।

फिल्म 'संतोष' तथा बंधन बाहों का में अभिनय किये है। आई.एस. जौहर कृत तन्झियां फिल्म नसबंदी में टाइटिल साँग।

महामहिम भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा द्वारा 1994 में सम्मानित किये गये।

1995 में अभिनंदित, 1996 में 'इतनी ऊँची मत छोड़ो', तथा त्रिवेणी, पुस्तकें राष्ट्रपति भवन में महामहिम को भेंट।

1994 में टी-सीरीझ द्वारा हुल्लड़ इन हाँगकाँग आडियो कैसेट रिलीझ हुआ।

इससे पूर्व एच. एम. वी. कम्पनी द्वारा चार ई. पी. एक एल. पी. तथा दो आडियो कैसेट

1964 से हिन्दी हास्य-व्यंग्य कवि के रूप में मंच पर अवतरित हुए। और अपना विशेष रूप से योगदान प्रदान किया है।

अभिरूचि : हिन्दी हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में इस विधा के हस्ताक्षर और हिन्दी काव्य मंच के जनप्रिय श्रृंगार है। श्री हुल्लड़ मुरादाबादी संभवतः हिन्दी के प्रथम हास्य कवि है। आपकी कविताओं के सात पुस्तकालय संस्करण प्रकाशित हो चुके है। जिनमें सृजनशील प्रतिभा के क्रमिक विकास और अचेतन संवदेनाशीलता के ठोस प्रमाण मिलते है। इनकी हास्य-व्यंग्य कविताओं का एच.एम.बी. कम्पनी ने एल. पी. रिकार्ड बनाया और हँसी का खजाना लुटाने वाले यह रिकार्ड इतने लोकप्रिय हो गये कि बाद में इसी कम्पनी ने हुल्लड़ के आडियों कैसेट भी रिलीज किये गये। और ये एक गीतकार के रूप में प्रसिद्ध हुए। ये बहुआयामी प्रतिभा एवं व्यक्तित्व की विशेषताओं के प्रमाण मिलते है। हास्य मानव जीवन की दुर्लभ उपलब्धि है। आज के आपाधापी और तनाव भरे जीवन में मनुष्य को हँसना दुर्लभ हो गया है। आज के इस कुंठाग्तस्त जीवन में लोगों को हँसी प्रदान करना एक श्रेयस् कर्म है। और यह हँसी प्रदान करने के सिद्धहस्त कलाकार हुल्लड़ मुरादाबादी है। इनकी हास्य कवितायें खूब हंसाती है लेकिन अपनी फलश्रुति में सुनने वाले को आत्मसत्य चिंतन करने पर विवश कर देती है।

हुल्लड़ जी की कवितायें समाज की विद्रूपताओं, विसंगतियों, विषमताओं पर भेदक व्यंग्य करती है। रचनाकार एक दर्पण ही नहीं दिशादर्शक भी होता है। और सभी

रचनात्मक दिशाओं से परिचित कराता है। अनुष्ठानधर्मी अंधश्रद्धा के स्थान पर क्रियाशील पुरुषार्थ को रेखांकित करते हुए हुल्लड़ जी सहजता से कहते है।

और सही अर्जुन है वही जो
हर किस्म के आभावों से
आर्थिक और राजनैतिक तनावों से
बढ़ती हुई मंहगाई से
हर रोज कमर कसकर लड़ा है।

हुल्लड़ जी सर्वमान्य अनुभव सिद्ध सूक्तियाँ भी प्रस्तुत कर देते हैं, जिनमें उनके अनुभव की प्रमाणिकता और दृढ़ आत्मविश्वास की प्रतीत होती है।

समय के समन्दर को छल नहीं पाएगा
दो-दो नावों में पैर रखने के प्रयास में
वह तो क्या, उसका बाप भी डूब जाएगा। 36

इनकी काव्य यात्रा 1962 से प्रारम्भ हुई उस समय ये मुरादाबाद में हिन्दू कालेज में बी.एस.सी. के छाज थे। रात-दिन हास्य कविताओं के कीड़े कुलबुलाया करते थे। जो ज्यादातर पैरोठियों के रूप में प्रस्फुटित होते थे। उन दिनों नीरज जी का एक गीत कारवां गुजर गया गुबार देखत रहें अत्यधिक लोकप्रिय था। इन्होंने इसका जवाब में एक पैरोड़ी लिखी-

'चोर माल ले गये, लोटे थाल ले गये
मूंग और मसूर की, सारी दाल ले गये
और हम डरे-डरे, खाट पर पड़े-पड़े
सामने खुले हुए किवाड़ देखते रहे।' 37

हुल्लड़ मुरादाबादी का हास्य की दुनिया में पहला कदम था।

कवि सम्मेलनीय देश-विदेश यात्रायें :-

इन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा के द्वारा विदेशों तक ख्याति प्राप्त की है। हिन्दी हास्य-व्यंग्य साहित्य को अपना विशेष योगदान दिया। अमेरिका तीन बार (1994, 1996, 1997 में) हाँगकाँग दो बार तथा बैंकाक, 1997 में कनाड़ा तथा नेपाल की यात्रायें की। 1998 में मैनचेस्टर, बर्मिहाम, लंदन और आस्ट्रोलिया (सिडनी) आदि विदेश यात्रायें करेक काव्य पाठ किया। 38

प्रेम किशोर 'पटाखा'

नाम : पं. प्रेम किशोर 'पटाखा'

जन्म : हिन्दी हास्य-व्यंग्य साहित्य के जाने-माने साहित्यकार 'कवि' प्रेमकिशोर 'पटाखा' का जन्म दीपावली, 27 अक्टूबर 1943. अलीगढ़ (उ.प्र.) में हुआ था।

कार्यक्षेत्र : हिन्दी जगत के हास्य-व्यंग्य साहित्य में मौलिक रचनाओं के साथ-साथ संपादन-संयोजन में अनेक लोकप्रिय पुस्तकें प्रकाशित हुई है। इन्होंने साहित्य की सभी विधाओं बाल साहित्य में गीत, कहानी, उपन्यास, कामिक्स आदि पर कार्य किया है। और ऑडियों, वीडियो एलबम, आदि तैयार किये है।

सम्मान : 'हास्यरत्न' एिकश्री एवं, 'बाल सखाश्री' से सम्मानित किया गया है।

अभिरुचि-व्यक्तित्व : पं. प्रेमकिशोर पटाखा ने पिछले एक दशक में चर्चित, ख्यातिप्राप्त और जाने-पहचाने गए हास्य-विनोद के सौ से भी अधिक कवियों का उनकी कविताओं का कोश तैयार किया गया है।

समाज के लिये जहाँ साहित्य की गंभीर रचनायें जो सूक्ष्म संवेदनाओ से जुड़ी, मानवीय सरोकारों से जुड़ी जरुरी है। वही हास्य-व्यंग्य की गुदगुदाने वाली, समाज की विसंगतियों को उजागर करनेवाली रचनाएँ भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। प्रेम किशोर 'पटाखा' की व्यंग्य रचनायें समाज की विद्रूपताओं, राजनैतिक, भ्रष्टाचार आदि विसंगतियों पर व्यंग्य किया है। 39

आशाकरण अटल

नाम : आशाकरण 'अटल'

जन्म : इनका जन्म 28 अक्टूबर 1945 में बेबटाँ, जिला जोधपूर (राजस्थान) में हुआ था।

कार्यक्षेत्र : हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में समय समय पर इनके लेख प्रकाशित होते है, जैसे-हिन्दी की लगभग सभी पत्र-पत्रिकाओं में पिछले पच्चीस वर्षों से समय-समय पर लेख एवं कविताएँ प्रकाशित हुए है।

काव्य-पाठ में भी इनका योगदान रहा है। आकाशवाणी एवं टेलीविजन कार्यक्रमों के साथ-साथ देश-विदेश में दो हजार से अधिक बार काव्य-पाठ में भाग लिया।

लेखन : इनका लेखन कार्य स्वतन्त्र रूप से चला। निर्देशन टेलीफिल्म, 'नमूना' और 'शर्मा गये सिनेमा' नामक डॉक्यूमेन्टरी फितम का लेखन-निर्देशन किया।

देश-विदेश की यात्रा :- काव्य पाठ के लिये इन्होंने देश-विदेश की यात्रायें की है। इन्होंने अमरीका, रूस, हाँग-काँग, जर्मनी, स्विट्जरलैंड, बैल्जियम, हांलैड, थाईलैंड, नेपाल, यू.ए.ई. मस्कट की साहित्यिक यात्राएँ की है। 40

अशोक चक्रधर

नाम : अशोक चक्रधर

जन्म : हिनदी जगत के प्रसिद्ध व्यंग्यकार अशोक चक्रधर का जन्म 8 फरवरी 1951. खुर्जा उ.प्र. में हुआ था।

शिक्षा : इनकी शिक्षा एम.ए. पी.एच.डी. (हिन्दी) डी.लिट् तक सम्पन्न हुई।

प्रकाशित कृतियाँ (व्यंग)

1. 'भोले-भाले'
2. 'तमाशा'
3. 'चुटपुट कुले'
4. 'हँसो और मर जाओ'
5. 'सो तो है'
6. 'बूढ़ें बचें'
7. 'ए जी सुनिए'
8. 'इसलिए बौड़मजी इसलिए'
9. 'खिड़ किया'
10. 'बोलगप्पे'
11. 'देश धन्या पंच कन्या'
12. 'जाने क्या टपके'
13. 'कविताई चुनी-चुनाई'
14. 'सोची -समझी'

आदि व्यंग्य काव्य संग्रहों के अलावा हिन्दी की अन्य विधाओं नाटक, बाल-साहित्य, प्रौढ़ साहित्य, आदि पर अपनी प्रतिभा शाली लेखिनी चलाई। और समय-समय पर अपना योगदान देते रहे हैं। हिन्दी के प्रखर व्यंग्यकारों में अपना सिक्का जमानें में सफल प्रतिभा के धनी है। 41

परिवार परिचय : इनके पिता श्री राधेश्याम 'प्रगतभ' प्रसिद्ध गीतकार एवं बालसाहित्यकार है तथा धर्म पिता (खसुर) स्व. काका हाथरसी अतिविख्यात हास्यकवि

है ।

कार्यक्षेत्र : संप्रति जामिया कालेज, नई दिल्ली में हिन्दी के प्राध्यापक। और काव्य, निबंध, नाटक, आलोचना आदि सभीविधाओं पर कार्य करने के साथ-साथ फिल्म निर्माण के क्षेत्र में प्रतिष्ठित। और वी. सीरियल वाह-वाह में लगातार इनका योगदान मिला और हास्य-काव्य विधा को गंभीरता प्रदान करने में सफल हुए है।

पुरस्कार : अशोक चक्रधार सचमुच हास्य-रत्न भी हैं, समाज-रत्न भी है तथा उन्हें काका हाथरसी हास्य पुरस्कार समेत अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। 42

जय कुमार 'रुसवा'

नाम : जय कुमार 'रुसवा'

जन्म : इनका जन्म 10 अगस्त 1957 रतनगढ़ राजस्थान में हुआ था।

कार्यक्षेत्र : इनका कार्य क्षेत्र बहुआयामी रहा है। विशेष रूप से कार्य किये है। 1971 में कलकत्ता आगमन तभी से बंगभूमि पर अनवरत साहित्य साधना। इन्होंने हिन्दी की सभी विधाओं कविता, छन्द, दोहे, मुक्तक, गीत, गजल, क्षणिकाये, कहानी, लघुकथा आदि सभी में रचनाधर्मिता का पालन किया है। परन्तु विशेष रूप से पहचान हास्य-व्यंग्य कवि के रूप में प्राप्त की है।

प्रकाशित कृतियाँ : भारत भर में अनेंकों पत्र-पत्रिकाओं में 1980 से अब तक लगभग 1250 से अधिक पृथक-पृथक विधाओं की रचनायें प्रकाशित हुई है।

तीन दर्जन काव्य – संकलनों में सादर रचनाएँ सम्मिलित। आकाशवाणी व दूरदर्शन से समय-समय पर रचनाओं का वाचन-अनुवाचन होता रहा है।

सम्मान एवं पुरस्कार : इन्होंने साहित्य के क्षेत्र में अनेककार्य किये और उपलब्धियाँ प्राप्त की है :

1. साहित्य सृजन सम्मान 1997
2. काव्य वैभव श्री सम्मान 1999

   सांस्कृतिक साहित्य खनन श्रृंखला-सावनेह द्वारा
3. साहित्य सम्मान 1997
4. साहित्य सम्मान 1998 राजेश्वरी प्रकाशन गुना द्वारा।
5. सुरभि साहित्य सौरभ सम्मान 1997 में जागृत प्रकाशन मुम्बई द्वारा।
6. काम्दबरी साहित्य परिषद निरनिरी द्वारा साहित्य पुरुष-सम्मान सन् 1998 में प्राप्त हुआ।

7. भाव सृष्टि समकालन समिति रामपुरा द्वारा काव्य किरीट सम्मान सन् 1998.
9. लोकप्रकाशन - कुशसिया द्वारा हिन्दी विधारत भारती-सम्मान सन् 1998-1999 में मिला।

जय कुमार 'रुसवा' हिन्दी-हास्य-व्यंग्य साहित्य में विशेष रूप से गौरव प्राप्त करने वाले कवि है हास्य-व्यंग्य क्षणिकाओं का संकलन टुकडे-टुकडे सोच कलकत्ता महानगर के हिन्दी समाज के लिये एक खुएकबरी है। 'रुसवा' जी ने अपने को हिन्दी समाज की अग्रिम पंक्ति में स्थापित कर लिया है। 43

पं. सुरेश नीरव

नाम. पं. सुरेश नीरव

प्रकाशित कृतियाँ :

1. समय सापेक्ष हूँ मैं,
2. उत्तरार्द्ध कविता
3. सद्भाव कविता
4. शब्द नहीं हैं हम,
5. भोर के लिए
6. आठवें दशक की व्यंग्य कविता
7. इक्कीसवीं सदी की दृष्टि
8. पोयट्री ऑफ सुरेश नीरव और प्रोयटिक इलेक्ट्रास (दोनों अंग्रेजी)
9. मजा मिलेनियम (हास्य गज़लें उर्दू और हिन्दी में)

इन्होंने हिन्दी साहित्य में विशेष योगादन देने के साथ-साथ अंग्रेजी, फ्रेंच, उर्दू एवं ताईवानी आदि भाषाओं का अनुवाद किया है।

सम्मान एवं पुरस्कार :

1. कन्हैयालाल मणिक लाल मुंशी पुरस्कार
2. भारतीय विधाभवन का भुवन भारती पुरस्कार
3. प्रेक्षा पुरस्कार
4. अट्टहास पुरस्कार
5. मीडिया इंटरनेशनल एवार्ड प्रधानमंत्री द्वारा तथा अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन का 'साहित्य श्री' अलंकरण राष्ट्रपति द्वारा।

इनकी कार्यकुशलता के लिये इन पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

कार्यक्षेत्र : दि हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह की प्रतिष्ठित साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मासिक पत्रिका कादम्बिनी के संपादन मंडल से विगत दो दशकों से संबद्ध। और वर्तमान में वरिष्ठ उपसंपादक।

इन्होंने दूरदर्शन पर भी अनेक कार्य किये है-

दूरदर्शन पर कमाल है, कंप्यूटर मैन,

पड़ोसन की कार, प्रहरी आदि धारावाहिकों का पटकथा लेखन भी किया है। और जी.टी.वी. पर कविता पाठ एवं कवि-सम्मेलनों का संचालन। रंग-रंगीले छैल-झबीले धारावहिक का पटकाथा लेखन एवं अभिनय। टेलीफिल्म ''आरंभा'' में गीत लेखन आदि धारावाहिक और फिल्मों में अपना योगदान दिया है।

देश-विदेश की यात्रायें :-

इन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा के द्वारा देश-विदेशों तक ख्याति प्राप्त की है इंग्लैण्ड, फ्रांस, डेनमार्कष नार्वे, मॉरीशस, सिंगापुर, इंडोनेशिया, मलेशिया, बैंकाक एवं नेपाल में अनेक कवि-सम्मेलनों का प्रतिनिधित्व एवं संचालन किया। राष्ट्रपति भवन तथा लालकिले से अनेक बार काव्यपाठ एवं कवि सम्मेलनों का संचालन किया है। 44

अशोक अंजुम

नाम : अशोक अंजुम

जन्म : इनका जन्म 25 सितम्बर 1966 में हुआ था।

शिक्षा : इनकी शिक्षा का कार्य बी.एस.सी., एम.ए. (अर्थशास्त्र, हिन्दी), बी.एड. तक चली।

अन्य विधाएँ :-

इन्होंने अपनी निजी शिक्षा के अलावा हिन्दी की सभी विधाओं में कार्य किया है। मुख्यतया ग़ज़ल, दोहा, गीत, हास्य-व्यंग्य, साथ ही लघुकथा, कहानी, व्यंग्य लेख, समीक्षा, भूमिका, साक्षात्कार, नाटक आदि।

परिवार परिचय : इनके पिता का नाम श्री जगदीश प्रसाद शर्मा और माता का श्रीमती रामवती है।

प्रकाशित व्यंग्य कृतियाँ : हिन्दी की सभी विधाओं पर अशोक अंजुम ने विशेष रूप से सहयोग प्रदान किया है। हिन्दी हास्य व्यंग्य में अनेक काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए है-

1. भानुमति का पिटारा (हास्य-व्यंग्य कविताएँ)
2. खुतलम खुतला (हास्य-व्यंग्य कविताएँ)

3. दुग्गी, चौके, छक्के (हास्य-व्यंग्य क़विता)

4. श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविता (हास्य-व्यंग्य कविताएँ)

5. हास्य-व्यंग्य में डूबे, 136 अजूबे (हास्य-व्यंग्य कविताएँ)

6. हास्य भी व्यंग्य भी (हास्य-व्यंग्य कविताएँ)

7. रंगारंग हास्य कवि सम्मेलन (हास्य-व्यंग्य)

8. आह भी, वाह भी (हास्य-व्यंग्य कविताएँ)

9. लोकप्रिय हास्य-व्यंग्य कविताएँ (हास्य-व्यंग्य कविता अंक)

10. हँसता खिलखिलाता हास्य कवि सम्मेलन (हास्य-व्यंग्य कविताएँ)

11. व्यंग्य कथाओं का संसार (हास्य-व्यंग्य कविताएँ)

12. हँसो बत्तीसी फाड़ के (हास-व्यंग्य कविताएँ)

13. हँसी के रगं, कवियों से संग (हास्य-व्यंग्य कविताएँ)

14. व्यंग्य भरे कटाक्ष (व्यंग्य लघुकथाएँ)

हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में इनका पूर्ण सहयोग मिला है। इन्होंने काव्य संग्रहों के अतिरिक्त देश की व पत्रिकाओं में इन्होंने ख्याति प्राप्त की है-

दै. राष्ट्रीय सहारा दिल्ली, दै. समवेत ऐकर (रायपुर), क्रान्तिमन्य (मेरठ), पंजाब केसरी (जालंधर), दैनिक भास्कर (भोपाल), दै. गुजरात वैभव (अहमदावाद), दै प्रभात खबर (राँची), पाञ्चजन्य दिल्ली, दैनिक नवभारत (इन्दौर), छपते-छपते (कलकत्ता), दै नई बात (भागलपुर), सुलभ इण्डिया (दिल्ली), दै. देशबन्धु (जबलपुर), दै. हिन्दी मिलाप (दैहराबाद), मासि. कागद (रोहतक), साप्ता. अक्षर भारत (दिल्ली) आदि पत्रों में इनके लेख प्रकाशित होते रहते हैं। देश के सैकड़ों सीर्षस्थ पत्रिकाओं में सहयोग प्रदान किया है।

कार्यक्षेत्र : इनका कार्य क्षेत्र व्यापक रूप में मिलता है। सम्पादक प्रयास (कविता को समर्पित त्रैमा)

अतिथि सम्पा. 1. प्रताप शोभा (त्रैमा) (सुलतनापुर) का दोह विशेषांक

2. खिलखिलाहट (अनि.) (सुल्तानपुर) का हास्य-व्यंग्य ग़ज़ल विशेषांक

पूर्व संपा. सह :

1. लीला अभिव्यक्ति (जैमा.) भीलवाड़ा (अब वेद)

2. नवोदय (अनियत) अलीगडढ़ (अव नंद)

अध्यक्ष : दृष्टि नाट्य मंच, अलीगढ़

सचिव : संवेदना साहित्य मंच, अलीगढ़

पूर्व सचिव : हरीतिमा पर्यावरण सुरक्षा मंच, अलीगढ़

पूर्व जिलाध्यक्ष : राजधानी कवि समाज, अलीगढ़

पूर्व सह सचिव : नवोदय काव्य-कला संगम, अलीगढ़

सदस्य : बोर्ड ऑफ एडवाइजर्स -1999 (अमेरिका वायोग्ताफिक्स इंस्टी. अमेरिका)

पूर्व सह सचिव : अखिल भारतीय विकास सेवा संग, दिल्ली

पूर्व विशेष संपा.: सवेरा न्यूज इण्डिया मुम्बई

आदि क्षेत्रों में इन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया है।

सम्मान : हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में इनकी विशिष्ट योग्यता के लिए इन्हें सम्मानित किया गया है विशिष्ट नागरिक, राष्ट्रभाषा गौरव, हास्य-व्यंग्य अवतार, श्रेष्ठ कवि, लेखकश्री, काव्यश्री, साहित्यश्री, समाजरत्न, हास्यावतार, मेन ऑफ द इयर, साहित्य सिरोमणि...

पंकज उदास (चर्चित ग़ज़ल गायक), श्री साहबसिंह वर्मा (तत्का. मुख्यमंत्री, दिल्ली), ज्ञानी जैल सिंह (भू.पू. राष्ट्रपति) श्री मुलायाम सिंह यादव (त. मु. मंत्री उ.प्र.) सासंद शीला गौतम (अलीगढ़) श्री आई. एस. पर्सवाल (महाप्रबंधक एन. टी.पी.सी. दादरी) श्री कन्हैयालाल सरफि (चर्चित उद्योगपति, मुम्बई) इत्यादि गणमान्य हस्तियों द्वारा विशिष्ट समारोहों में सम्मानित किये गये है।

पुरस्कार : श्रीमती मूलादेवी काव्य-पुरस्कार (भारत भारती साहित्य संस्थान) द्वारा मेरी प्रिय ग़ज़लें पुस्तक पर1995 स्व. रूदौलवी पुरस्कार (मित्र संगम पत्रिका, दिल्ली) द्वारा

- दुष्यंत कुमार स्मृति सम्मान -1999

(युवा साहित्य मंडल, ग़ाज़ियानाद द्वारा)

- सरस्वती अरोड़ा स्मृति काव्य पुरस्कार -2000

(भारत-ऐशियाई साहित्य अका, दिल्ली द्वारा)

- डॉ. परमेश्वर गोयल व्यंग्य शिखर सम्मान 2001.

अखिल भारतीय साहित्य कला मंच. मुरादाबाद द्वारा अपनी विशेष काव्य प्रतिभा के लिये सम्मान तथा पुरस्कारों से विभूषित किये गये। और साहित्य के क्षेत्र में ख्याति प्राप्ति की। अशोक 'अंजुम' द्वारा संपादित हास्य-व्यंग्य अपने आप में एक अनोखा साहित्य है। 45

काका विहारी

नाम : काका विहारी यानि. डॉ. परमेश्वर गोयल

जन्म : इनका जन्म कृष्णपक्ष संवत् 1991 अर्थात् सन् 1934 में झुन्झुनुं जिले के बड़गाँव राजस्थान में एक सम्पन्न, सम्भ्रान्त परिवार में हुआ था। इस साधक के मन में राजस्थान तथा राजस्थानी भाषा के प्रति उतना ही मान-सम्मान है, उतनी ही श्रद्धा है, जितनी श्रद्धा इनके मन में कर्मभूमि विहार एवं पूणिया के गुलाब बाग के प्रति है। 46

शिक्षा :- विक्रमशीला हिन्दी-विद्यापीठ ने इन्हें विधासागर (डी. लिट्र)की मानद उपाधि से विभूषित किया है।

प्रकाशित कृतियाँ : अब तक इनकी कुछ 28 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। इन्होंने हिन्दी की सभी विधाों पर अपनी काव्य प्रतिभा की लेखनी चलाई है। इनके काव्य में समाज में बढ़ती विद्रूपओं राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक आदि की विसंगतियों पर व्यंग्य के द्वारा कुठाराधात किया है। इनकी 18 पुस्तकें हास्य-व्यंग्य कविताओं के संग्रह हैं -

1. 'नहले उपरों दहलो'
2. 'चींत रै चरूँतिया'
3. 'राजस्थानी हास्य व्यंग्य-संग्रह'
4. 'यथार्थ का अहसास'
5. 'समय का सच'
6. इनके दो लघुकथा हैं। 'अन्तद्विन्द्व' इनका कहानी संग्रह है, तो 'महाकोशी' यात्रा वृन्तान्त है। इनके अतिरिक्त प्यार हमारा नारा है, 'मारेगी बाबू महँगाई' और 'गीत एकता के हम गाये' काव्य रूप में बाल साहित्य है। इन्होंने साहित्य में पूर्ण सहयोग दिया और अनोखी ख्याति प्राप्त की है। 47

सम्मान एवं पुरस्कार : सिलीगुड़ी, फारनिसग़ज, दुमका, प्रतापगढ़ (उ.प्र.) की कई साहित्यिक संस्थाओं ने इनका सारस्वत सम्मान किया है। और अनेक उपाधियों से विभूषित किया है।

व्यक्तित्व एवं कृतित्व : यह सत्य है कि किसी भी रचनाकार के व्यक्तित्व का प्रभाव उसके कृतित्व पर पड़ता है। उनकें कृतित्व को पढ़कर यह जानकारी प्राप्त होती है। कि इनका व्यक्तित्व बहुआयामी रहा है।

ये मानवीय चेतना एवं राष्ट्रीय भावना के कुशल चितेरे है। अपनी व्यवस्ताओं के बावजूद कवि-सम्मेलनों, संगोष्ठियों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए पहुँचते हैं।

साधारण वेशभूषा से परिभाषित इनका व्यक्तित्व अनूठा ही नहीं, प्रभावशाली भी है। प्रत्येक साहित्यकारी की सृजन-प्रक्रिया अलग होती है। गोयल जी ने व्यंग्य-कविताओं का सृजन और संग्रह कर विहार में अपनी अलग पहचान बनायी है। इन्होंने जो समाज की विसंगतियों पर व्यंग्य किया है। उसका अपना अलग महत्व है। व्यंग्य को इन्होंने अपने ढंग से परिभाषित किया है :

व्यंग्य,
बन्दूक नहीं;
अलार्म घरी है।
कहता है जागो,
विषम घड़ी है।

समाजकी विषमताओं से मुक्ति दिलाने के लिए इन्होंने व्यंग्य विधाको अपनी साहित्य-साधना का आधार बनाया है। समाज की कटु परिस्थितियों से परिचित कराना इनका लक्ष्य है। इनका व्यंग्य तीखा है, मर्मस्पर्शी भी है और दिशानिर्देशक भी है। 48

*

अध्याय -3

संदर्भग्रन्थ-सूचि

1. काका हाथरसी एक समीक्षा यात्रा डॉ. मिथिलेश महेश्वरी। पृ. 10
2. काका हाथरसी एक समीक्षा यात्रा डॉ. मिथिलेश महेश्वरी। पृ. 16-17
3. काका हाथरसी एक समीक्षा यात्रा डॉ. मिथिलेश महेश्वरी। पृ 21
4. काका हाथरसी एक समीक्षा यात्रा डॉ. मिथिलेश महेश्वरी। पृ. 17
5. काका हाथरसी एक समीक्षा यात्रा डॉ. मिथिलेश महेश्वरी। पृ 13
6. काका हाथरसी एक समीक्षा यात्रा डॉ. मिथिलेश महेश्वरी। पृ. 22
7. काका हाथरसी एक समीक्षा यात्रा डॉ. मिथिलेश महेश्वरी। पृ. 25
8. काका हाथरसी एक समीक्षा यात्रा डॉ. मिथिलेश महेश्वरी। पृ. 31
9. काका हाथरसी एक समीक्षा यात्रा डॉ. मिथिलेश महेश्वरी। पृ. 74
10. काका हाथरसी एक समीक्षा यात्रा डॉ. मिथिलेश महेश्वरी। पृ. 193
11. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य विधाएँ डॉ. बापूराव देसाई। पृ. 162
12. हास्य-विनोद काव्य कोश संपादक प्रेमकिशोर पटाखा। पृ. 35
13. हास्य-विनोद काव्य कोश संपादक प्रेमकिशोर पटाखा। पृ. 35
14. हास्य-व्यंग्य के विविधरंग बरसाने लाल चतुर्वेदी संस्करण. 1994
15. हास्य-विनोद काव्य कोश संपादक प्रेमकिशोर पटाखा। पृ. 13
16. पत्राचार द्वारा डॉ. प्रसाद मिश्र। दि. 13-10-2004
17. हँसी आती है- शैल चतुर्वेदी
18. हास्य-विनोद काव्य कोश संपादक प्रेमकिशोर पटाखा। पृ. 85
19. सफर साठ साल का संपादक. डॉ. अजय जनमेजय हिन्दी साहित्य निकेतन बिजनौर। पृ. 352
20. सफर साठ साल का संपादक. डॉ. अजय जनमेजय हिन्दी साहित्य निकेतन बिजनौर। पृ. 350
21. सफर साठ साल का संपादक. डॉ अजय जनमेजय हिन्दी साहित्य निकेतन बिजनौर। पृ. 355
22. विनोद काव्य कोश प्रेम किशोर पटाखा। पृ. 384
23. सांड का ब्याह, कालीचरण गौतम् संस्करण 1991
24. हास्य-विनोद काव्य कोश प्रेम किशोर "पटाखा" पृ. 28
25. हास्य-विनोद काव्य कोश प्रेम किशोर "पटाखा" पृ. 22
26. हास्य-विनोद काव्य कोश प्रेम किशोर "पटाखा" पृ. 31
27 हास्य-विनोद काव्य कोश प्रेम किशोर "पटाखा" पृ.
28. पत्राचार द्वारा
29. अब तो आंसू पोछ, अल्हड बिकानेरी संस्करण -1997
30. हास्य-विनोद काव्य कोश प्रेम किशोर "पटाखा" पृ.
31. गिद्धभोज, रामकिशोर मेहता संस्करण 1990 अनुजा प्रकाशन दिल्ली।
32. दादा की रेल यात्रा, व्यंग्य खण्डकाव्य डॉ. श्री राम ठाकुर "दादा" संस्करण 1996 निर्देशिका प्रकाशन दिल्ली।
33. चेतन-चुटकी, आदित्य शर्मा चेतन प्रकाशक, साहित्य प्रकाशन संस्करण। 2002
34. पत्राचार द्वारा
35. हास्य-विनोद काव्य कोश प्रेम किशोर पटाखा पृ. 157
36. दमदार और दुमदार दोहे हुल्लड मुरादाबादी संस्करण 2002
37. दमदार और दुमदार दोहे हुल्लड मुरादाबादी संस्करण। पृ. 10
38. अच्छा है पर कभी-कभी, हुल्लड मुरादाबादी संस्करण 1998
39. हास्य-विनोद काव्य कोश प्रेम किशोर पटाखा संस्करण-2001
40. क्या हम समझते नहीं है आशाकरण "अटल" संस्करण 2000
41. सोची, समझी, अशोक चक्रधर संस्कारण 2002
42. दौ सौ अस्सी साहित्यकार डॉ. रामप्रसाद मिश्र संस्कारण 1998
43. टुकडे-टुकडे सोच, जय कुमार रुसवा संस्करण -1999

44. मजा मिलेनियम, पं. सुरेश नीरव। पृ.
45. पत्राचार द्वारा 15 फरवरी सन् 2005
46. व्यंग्य के पुरोधा, डॉ. परमेश्वर गोयल। पृ. 139
47. व्यंग्य के पुरोधा, डॉ. परमेश्वर गोयल । पृ. 141
48. व्यंग्य के पुरोधा, डॉ. परमेश्वर गोयल । पृ. 141

*